International Journal of Education and Science Research Review
E-ISSN 2348-6457
October- 2019, Volume-6, Issue-5
P-ISSN 2349-1817
www.ijesrr.org Email- editor@ijesrr.org

जीवन सत्य के साक्षी – सुभाष :

Salim Banadar M.A,M.Phil
Dakshina Bharat Hindi Prachar Sabha, Dharwad
saleembandar@gmail.com
9986327672

'नेताजी सुभाषचंद्र बोस की जीवन यात्रा सदाबहार नदी की तरह है'। जो अपने में सत्य को चरितार्थ किए ज्ञात-अज्ञात दिशोन्मुख होती हुई कभी विराम नहीं लेती। जैसे नदी कभी मरती नहीं, सदा समर्पित होती है, ठीक उसी प्रकार सुभाष के साथ हुआ है।

सुभाष जी 23 जनवरी, 1897 में जन्मे थे। माता प्रभावती, पिता जानकीनाथ बासु। सुभाष इनके नवीं संतान थे। पुत्रों में वे छठे स्थान पर थे। सुभाष का जन्म उढीसा के एक साधारण शहर कटक में हुआ था। इनके पिता जानकीनाथ गाँव के रहने वाले थे। और अपनी वकालत के लिए कटक को केन्द्र बनाया। सुभाष के दादाजी हरनाथ बासु शाक्त धर्म के थे। सुभाष की माता प्रभावती दत्त परिवार से थी। वह दृठ नीति पर चलने वाली अतः अनुशासन की जीती जागती मिसाल थी। और इस भरा पूरा परिवार के केन्द्र में प्रभावती थी। जानकीनाथ नगरपालिका, कटक के अध्यक्ष चुने गए । सन् 1812 में बंगाल व्यवस्थापिका के सदस्य भी बने और उन्हें रायबहादूर के सम्मान से भी नवाज़ा गया। परंतु सन् 1930 के दमन ने उनकी आँखें खोल दी और रायबहादुर सम्मान को लौटा दिया। यह परीवार अपने और अपने देश के गौरव के प्रति जागरूक था, चैतन्य था। खादी के प्रती उसका समपर्ण था और गाँधी की ओर आकर्षण।

सुभाष अपने भरे पूरे परिवार में अकेलेपन को महसुस करते थे। एक दाई थी शारदा जो उन्हें 'राजा' कह कर पुकारती और वे उसे दाई माँ कह कर। सुभाष बैपटिस्ट मिशन स्कूल जाने लगे। वहाँ उन्हें मिस सारा लॉरेंस उनकी प्रिय टीचर थी। उसने सुभाष को अंग्रेजी बोलने की ताकत दी और परिस्थितियों से लडने का साहस। वह कहती फूल और काँटे एक साथ रहते हैं। उनकी दोस्ती का उदाहरण देती। फूल और

काँटों के जैसा पडोसी धर्म अपनाने कहती। मिस सारा सुभाष को उसके हर सवाल का जवाब देती है। सुभाष को अपने आप पे आत्म विश्वास रखने को कहती है। उस दिन से सुभाष में एक नया जोश आया था। उनके मन में नया उत्साह भरने लगा। उनके एकांत को नए साथी मिल गए। समय गुज़रता गया सुभाष आगे बडे अब वे बैपटिस्ट स्कूल से रोवेंसं कॉलिजिएट स्कूल में जाने लगे।

नए स्कूल में सुभष को नए सर बेनी माधवदास ने बहुत गहराई तक प्रभावित किया। माधवदास के उदात्त गुण थे, जिनसे सुभाष उनके प्रति श्रध्दा भक्ति रखते थे। मगर एक साल में ही उनकी बदली हो गई। बेनी माधवदास ने सुभाष के पत्र के उत्तर में लिखा था कि "तुम आत्मकेन्द्रित होना चाहते हो उससे एकाग्रता और गंभीर चिंतन का अभ्यास प्रारंभ होता हैं। और तुम स्वामी विवेकानंद की और आकर्षित हो और आत्मकेंद्रित होना उनकी पहली पहचान है"। सुभाष इस पत्र को बार बार पढा। और अपने जीवन के लिए आदर्श विवेकानंद जी को बनाया। फिर सुभाष जीवन के लक्ष्य को पहचानने की दिशा में दिन रात एक करने लगे।

"हाथ कंगन को आरसी क्या पढे -लिखे को फारसी कया"। सुभाष एकाग्र मन से अपनी मन आत्मा से जूझते हुए सीचने लगे। नींद में स्वामी विवेकानंद जी मातृभूमि की सेवा करने का इशारा दे कर आंखों से ओझल हो गए। सन् 1905 में ब्रिटिश सरकार बंगाल विभाजन की योजना सामने लाई। इस से बंगाली जनता में क्रांति की लहर दौड गई। मगर इन सब का सुभाष पर कोई असर नहीं पडा। क्योंकि अब तक सुभाष राजनिति में दखल नहीं रखते थे। मगर अखबारों से क्रांतिकारियों के चित्र काटकर अपने अध्ययन कक्ष में लगाते थे। मगर जानकीनाथ के पुलिस मित्र के कहने पर अध्ययन कक्ष में लगे क्रांतिकारियों के चित्रों को निकाला गया।

सुभाष पर स्वामी विवेकानंद जी के विचारों का प्रभाव इतना घनीभूत हुआ कि वे माता पिता के आदेश का उल्लंघन ही नहीं विरोध भी करना प्रारंभ किया। अखिर कटक में उनकी पढाई पूरी हुई सुभाष मैट्रिक पास हो चुके थे। आगे की पढाई के लिए कलकत्ता जाना था। कलकत्ता का सरकारी तथा प्रतिष्टित प्रेसिडेंसी कॉलेज, यहाँ पर अच्छे घराने के विध्यार्थी पढने आते थे। इन में विदेशी विध्यार्थियों की संख्या

अधिक थी। सुभाष इंडेन हिंदी छात्रावास में स्थान पा सके। इस क्रांतिकारियों का गढ माना जाता था। आए दिन पुलिस तलाशी लेने आती।

पूरे देश और खास कर बंगाल में क्रांतिकारी अरविंद का नाम। अरविंद कलकत्ता से '**आर्थ पत्रिका**' निकालते थे। सुभाष अरविंद से प्रभावित हो चुके थे। और उनके रहस्यवादी दर्शनों से जुडे लेखों को बडी तल्लीनता से पढते थे। अरविंद के वाक्य थे- "मैं तुममें से कुछ को महान व्यक्ति के रूप में देखना चाहता हूँ अपने लिए महान नहीं अपितु भारत के लिए महान बनाने के लिए जिससे वह विश्व के स्वतंत्र राष्ट्रों के बीच अपना सिर ऊँचा करके खडा हो सके। तुममें जो गरीब और नगण्य है, उन्हें अपनी गरीबी और नगण्यता ही मातृ भूमि की सेवा में लगानी चाहीए फलतः मातृ भूमि समृध्द बन सके, उसकी खुशी के लिए कष्ट झेलो और कुर्बानी दो। निस्वार्थ भाव से मातृ भूमि को बंधनकार से मुक्ति दिलाओ"।

सुभाष को अब अपना लक्ष्य समझ आ गया था। गाँव की घिसी पिटी ज़िंदगी से शहर की भागदौड भरी ज़िंदगी में उन्हें नया अनुभव हो रहा था। सुभाष को अपने लक्ष्य तक पहुंचने के लिए एक गुरू की आवश्यकता थी। अरविंद जी भारत को पूर्ण आजादी दिलाना चाहते थे जिस में नो मोल तोल की बात थी। वे धर्म स्वीकारने चले गए थे। कॉलेज की छुट्टीयाँ थी सुभाष गाँव आ गए। गाँव में हैज की बीमारी फैली थी। गाँव के कुछ जवान लडके बीमारों की मदद कर रहे थे। सुभाष भी उन के साथ जुड गए। तब उन्हें असली भारत दर्शन हुआ। अब सुभाष 17 वर्ष के हो गए थे। बिना अपने घर में बताए घर त्याग का उत्तर भारत के तीर्थों की ओर चले गए। कई सारे गुरूओं से मिले। कई सारे धार्मिक स्थानों पर गए। उनके साथ उनके मित्र हरिपद चटोपाध्याय थे। धर्म के आड में पापाचार अंधविश्वास भ्रष्टाचार मिथ्याचार का अनुभव हुआ। निराश होकर घर वापस आ गए।

कॉलेज खुल गया, सुभाष फिर कॉलेज आने लगे। अंग्रेजों की मनमानी को गहराई से अनुभव किया। भारतीय विध्यार्थियों के प्रति उपेक्षा करते, अनादर करते उन्हें मारपीट भी देते। भारतीय विध्यार्थी आतंकवादीयों से कोई समर्थन नहीं था। फिर भी अंग्रेज मान चुके थे शिक्षा संस्कृति से ही भारतीय भारत को आज़ाद करवा सकते हैं। अंग्रेजों के अत्याचार का समाधान उन्हें कहीं नज़र नहीं आ रहा था।

सुभाष इंटर पास कर के बी.ए ऑनर्स में दर्शन शास्त्र विषय लिया था। उन में राजनीति चेतना नहीं थी। एक दिन प्रोफेसर ई.एफ आर्टन के हमले से कृष्ट हो उटे। आर्टन बिला वजह भारतीय विध्यार्थियों को डाँटते थे। आर्टन के दुर्व्यवहार से परेशान हो कर सुभाष प्रिंसीपल एस.आर.जेम्स के पास सभी विध्यार्थियों को ले जाते और आर्टन के विरूध्द शिकायत करते हैं। प्रिंसीपल सुभाष की बातें सुन कर सकारात्मक उत्तर देते हैं और आर्टन को समझाने का वादा भी करते हैं। कुछ दिन शांती से गुज़र गए एक माह भी नहीं हुआ था कि आर्टन की फिर से दुर्व्यवहार सामने आती हैं। कुछ विध्यार्थी आर्टन के कमरे के बाहर घूम रहे थे। इतनी सी बात के लिए आर्टन उन के साथ मार पीट करते हैं। सुभाष को इस से बढा धक्का लगता है। और वे प्रिंसीपल से बात करते हैं। दोनों में बहस होती है। सुभाष प्रिंसीपल जेम्स से कहते हैं। आर्टन हम से माफी माँगे, सारी फील करें। मगर जेम्स सुभाष से गुस्से से बात करते हैं। वे तुम्हारे प्रोफेसर हैं और तुम स्टूडेंट। मैं सब उन्हें समझाउँगा तुम अपनी क्लास में जाओ कहते हैं मगर सुभाष अपने बात पर अडे रहते हैं।

सुभाष लगातार प्रिंसीपल से बहस करते रहते हैं। सुभाष प्रिंसीपल को याद दिलाते हैं पहले भी आपने कहा था कि आर्टन को समझाएँगे मगर वे नहीं समझे हमें अपने मान सम्मान के लिए स्ट्राइक करना पडेगा, सडकों पर आना पडेगा। इस कॉलेज की बदनामी होगी। जैम्स के समझाने पर भी सुभाष नहीं माने कॉलेज में स्ट्राइक हुई। और जंगल में लगी आग की तरह बात फैल गई। ब्रिटिश सरकार हिल गई जाँच समिति बनी पूरी तहकीकात किया गया और कुछ दिनों के लिए कॉलेज बंद कर दी गई। और सुभाष को सजा दे कर कॉलेज से निकाला गया।

सुभाष वापस अपने गाँव कटक लौट आए और समाज सेवा में अपना समय लगाया। 1917 में सुभाष स्कॉटिश चर्च कॉलेज में बी.ए तृतीय वर्ष में प्रवेश लिया। और 1919 में बी.ए में प्रथम श्रेणी में उन्तीर्ण हुए। आगे सुभाष एम.ए मनोविज्ञान विषय पर करना सोच रहे थे। मगर उनके पिता जानकीनाथ उन्हें इंग्लैंड जाकर सिविल सेवा की तैयारी करने को कहा। सुभाष सोच विचार कर 9 सितम्बर 1919 को पानी के जहाज से 5 दिन के सफर से इंग्लैंड पहुँच गए। वहाँ कैब्रिज यूनिवर्सिटी में एडमिशन मिला। 9 माह में आय सी एस की परिक्षा पास कर पूरे विध्यार्थियों में चौथे स्थान पर आए।

आय सी एस की परिक्षा पास करने के बाद सुभाष अब दुविदा में पढ गए थे। भारत जाकर मातृ भूमी की सेवा करे या इंग्लैंड में ही नौकरी कर आराम से जीवन बिताए। इसी दुविदा के समाधान के लिए अपने बडे भाई को पत्र लिखते हैं।

सुभाष इंग्लैंड में इंडियन मजलिस समिति में जाने लगे थे। इस समिति में अनेक कार्यक्रम होते थे। सरोजिनी नायडू समेत कई लोगों के भाषण भी हुआ करते थे। सुभाष इंग्लैंड वासियों के कई गुणों से प्रभावित हुए थे। जैसे समय के पाबंद, अत्यंत आशावादी सुख समृध्दि और प्रगती के बारे में सोचना।

सुभाष के मन में द्वंद्व थम नहीं रहा था। आई सी एस की नौकरी करें या नहीं। सुभाष को अपने परिवार का भी खयाल करना था ऐसे में एक तरफ स्वामी विवेकानंद और दूसरी तरफ अरविंद के विचार सुभाष को बल प्रदान कर रहे थे। मानो वे कह रहे थे – "सुभाष गीता के सार को समझो, कुछ करना है तो आगे बढकर सामने आना होगा। अर्जुन का मन लाओ। संबधों के मोहपाश से अपने को निकालो। मानव जाति के कल्याण के लिए अपने तिमिर में जुटाओ"।

22 अप्रैल, 1921 को सुबह सुभाष कैंब्रिज से सेक्रेटरी आफ स्टेट फॉर इंडिया ई0 एस0 मांटेग्यू के नाम पत्र लिखते हैं। जिस में आए सी एस के नौकरी से त्यागपत्र रहता है। सुभाष पूरी तरह अपना मन बना लिया था। भारत जाकर देश की स्वाधीनता और समृध्दी के लिए काम करेंगे। इस लिए सुभाष 16 फरवरी 1921 को चितरंजनदास देशबंधु जी को पत्र लिख कर उनका मार्ग प्रशस्त करने कहते हैं। और आए सी एस का त्यागपत्र मंजूर होने के बाद भारत आकर देशबंधु के स्वराज समाचार पत्र को अंग्रेजी में प्ररंभ करने के लिए सहायक संपादक का कार्य करना चाहते थे। नहीं तो राष्ट्रीय विध्यालय में अध्यापन कार्य करना चाहते हैं। और मेरे पोस कांग्रेस पक्ष के संबंध में भी बहुत से प्रस्ताव हैं कह कर पत्र में लिखते हैं।

16 जुलाई 1921 को सुभाष भारत लौट आए। लेबरनम रोड पर स्थित गाँधी जी के नीवास पर पुहुँच कर सुभाष अपनी तीन जिज्ञासाओं का उत्तर पूछते हैं। "अंग्रेजों ध्वारा हुई कई सारे अहिंसात्मक शोषण और गाँधी जी के आंदोलन घूम रहे थे"। सुभाष गाँधी जी के बीच एक वर्तालप होती है।फिर कलकत्ता

पहुँचकर देशबंधु जी से मिलते हैं। इन को राष्ट्रीय नेशनल वालंटियर सेना दल का अध्यक्ष और बंगाल प्रादेशिक कांग्रेस समिति के प्रचार बोर्ड का उत्तरदायित्व भी सौंप दिया जाता है।

जेल भरो आंदोलन में देशबंधु जी को जेल में डाला गया। 10 दिसंबर, 1921 की गैरकानूनी परेड के जुर्म में सुभाष को भी पहली बार 6 माह की जेल हुई। इस कारण 4 फरवरी 1922 को चौरी चौरा असहयोगियों छटा जेल का घेराव 21 सिपाही और थाना स्वाहा हुआ। गाँधी जी अहिंसावादी थे। उन्हें सहन नहीं हुआ। इस संबंध में रोलाँ ने लिखा है राष्ट्र की समूची शांती इकट्ठी करके तैय की गई अवाधि से पूर्व हाँफते हुए राष्ट्र को यकायक ब्रेक लगा देना बहुत खतरनाक है।

4 अगस्त, 1922 को सुभाष जेल से बाहर आए। दिसंबर में चितरंजनदास का परिवर्तन समर्थक प्रस्ताव कांग्रेस ने पास नहीं किया। देशबंधु जी कांग्रस से अलग हुए और स्वराज्य पार्टी को जन्म दिया। और चुनाव में स्वराज्य पार्टी की जीत हुई। इस से प्रेरीत होकर सुभाष अखील बंगाल युवा लीग की नींव रखी।

स्वराज पार्टी आतंकवाद के विरूध्द थी। मगर सरकार सुभाष को गिरफतार कर जेल भेज दिया। 25 अक्टूबर, 1924 को यह अप्रत्याशीत घटना घट गई। दि स्टेट्समैन और दि इंग्लिश मैन दोनों अखबार ने सुभाष पर आरोप लगाया कि सुभाष ब्रिटिश सत्ता को भारत से निकाल फेंकने में है। मगर यह साबित नहीं हुआ। सुभाष निगम का कार्य जेल से निपटा रहे थे। मगर एक पुलिस मैन पर बरसने के कारण सरकार सुभाष को बहरामपुर जेल में ट्रांसफर कर दिया। इसका पता किसी को नहीं था। बीच रास्ते में से ही अन्य कैदियों के साथ रंगून (बर्मा) के लिए पानी के जहाज से रवाना कर दिया। मांडले जेल जहाँ लोकमान्य तिलक ने छह वर्ष काटे थे। वहाँ जेल कमिशनर पैटमैन ने जेल अफसरों को बताया था कि सुभाष उन खतरनाक आट कैदियों में से है, जो ब्रिटिश सरकार को भारत से निकालने का षडयंत्र रचते रहते थे।

देशबंधु ने फारवर्ड दैनिक प्रारंभ किया था। 16 जून, 1925 को देशबंधु का देहांत हो गया। वे सुभाष को काराग्रह से मुक्त कराना चाहते थे। उन्होंने अपने भाषण में कहा था-"मैं यही कह सकता हूँ कि श्री

सुभाषचंद्र बोस उतने क्रांतीकारी हैं जितना स्वंय मैं भी हूँ। अगर देश से प्रेम करना गुनाह है तो मैं गुनहगार हूँ। सुभाष की 1818 के रेग्यूलेशन 3 के अंतर्गत गिरफतारी इस कॉर्पोरेशन के लिए भयावह है। कार्यपालक अधिकारी के अलावा एक के बाद एक सब को जेल में डालेंगें। बिना किसी आरोप के सुभाष के घर घुसकर पुलिस उन्हें गिरफतार कर ले गए "।

संदर्भ ग्रंथ -

1. सुभाष एक खोज - राजेंद्र मोहन भटनागर - किताबघर प्रकाशन - 2009